

# चुंगी लेनेवाला जक्कई

(लूका 19:1-10)

वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था। 2 और देखो, जक्कई नाम एक मनुष्य था जो चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था। 3 वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था। 4 तब उस को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था। 5 जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि कर के उस से कहा; हे जक्कई झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। 6 वह तुरन्त उतर कर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। 7 यह देख कर सब लोगे कुड़कुड़ा कर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है। 8 जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं। 9 तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है। 10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को ढूँढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।

वह यीशु को देखना चाहता था। (लूका 19:3)

जब एक व्यक्ति यीशु को देखना चाहता है कि यीशु कौन है, तब से उसकी ज़िंदगी बदलने लगती है, जैसे जक्कई की ज़िंदगी बदलने लगी थी। हालाँकि, जक्कई को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि आज उसके साथ क्या होने वाला है। मगर क्योंकि उसने यीशु को देखने और जानने की इच्छा रखी थी, इसीलिए उसकी ज़िंदगी में उद्धार का आना निश्चित था।

परन्तु वह भीड़ के कारण देख नहीं सकता था। (लूका 19:3)

यह भीड़ उन्हीं लोगों की थी, जो यीशु को देखने के लिए जक्कई से पहले आ चुके थे। अगर जक्कई भी थोड़ा पहले आ जाता, तो शायद वह और करीब से देख सकता था। हमारे साथ भी ऐसा ही होता है—हम जितनी अधिक देर करते हैं, भीड़ उतनी ही बढ़ जाती है, और फिर यीशु से मिलने के लिए 'भीड़' नाम की बाधाएँ हमारे बीच आ जाती हैं।

क्योंकि वह नाटा था। (लूका 19:3)

यह नहीं लिखा गया कि यीशु जक्कई से दूर था, बल्कि यह लिखा गया कि जक्कई नाटा था। अर्थात्, समस्या यीशु की दूरी नहीं थी, बल्कि जक्कई की अपनी सीमाएँ थीं। इसी तरह, कभी-कभी हम भी आत्मिक रूप से "नाटे" हो जाते हैं—चाहे वह विश्वास में हो, पवित्रता में हो, आज्ञा के पालन में हो, या वचन के भोजन में हो। और इन्हीं आत्मिक "नाटेपन" की वजह से हम यीशु को ठीक से देख नहीं पाते।

तब उसको देखने के लिए वह (लूका 19:4)

ध्यान देने वाली बात यह है कि लिखा गया है कि जक्कई ने यीशु को देखने के लिए प्रयास किया, ना कि यीशु को दिखाने के लिए। आजकल बहुत से लोग यीशु को दिखाने के लिए बहुत कुछ करते हैं, परन्तु स्वयं उसे देखने की लालसा नहीं रखते। यदि आप केवल यीशु को दिखाने के लिए कुछ करोगे, तो स्वयं उसे देखने से चूक जाओगे। क्योंकि यीशु यह भी देख रहा है कि आप क्या और क्यों कर रहे हैं। लेकिन यदि आप सच में उसे देखने की इच्छा से कुछ कर रहे हैं, तो वह अवश्य प्रकट होगा और आपको देखने मिलेगा।

"धन्य हैं वे जिनका मन शुद्ध है, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" (मत्ती 5:8)

## वह आगे दौड़ा और एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया। (लूका 19:4)

1. यहाँ पर लिखा गया है कि जक्कई 'आगे' दौड़ा, 'पीछे' नहीं। इसका गहरा अर्थ यह है कि यदि हमें यीशु को देखना है, तो हमें अपने जीवन में आगे बढ़ना होगा, न कि पीछे जाना। आध्यात्मिक रूप से भी, हम यीशु को तभी देख सकते हैं जब हम पाप, संकोच, और पुराने जीवन को छोड़कर आगे बढ़ने का निर्णय लेते हैं। पीछे मुड़ने से हम यीशु से और दूर हो सकते हैं, परंतु जब हम आत्मिक रूप से आगे बढ़ते हैं, तो हम उसके और निकट आ जाते हैं।

"जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।" (लूका 9:62)

2. लिखा गया है कि दौड़कर गया, ना कि आराम से चलकर। जब बात यीशु को देखने की हो, तो हमें जल्द से जल्द उसके पास पहुँचना होगा। जक्कई ने आराम से चलकर नहीं, बल्कि दौड़कर यीशु तक पहुँचने का प्रयास किया। यदि हम अपने हिसाब से धीरे-धीरे, आराम से यीशु को खोजेंगे, तो हम उसे नहीं पा सकेंगे। आत्मिक जीवन में हमें उत्सुकता, तड़प और प्रयास के साथ यीशु की ओर दौड़ना चाहिए, क्योंकि "आज उद्धार का दिन है"। (2 कुरिन्थियों 6:2)

3. लिखा गया है कि जक्कई चुंगी लेने वालों का प्रधान था और धनी भी था। जाहिर है कि उसका इस तरह पेड़ पर चढ़ना उसके मान-सम्मान के अनुरूप नहीं था। फिर भी, उसने बिना कुछ सोचे यीशु को देखने के लिए हर चीज़ त्याग दी। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए—लोग क्या सोचेंगे, मेरे रुतबे का क्या होगा, समाज क्या कहेगा—इन सब बातों को पीछे छोड़कर यदि हम यीशु को देखने की सच्ची लालसा रखते हैं, तो हमें किसी भी स्थिति में उससे मिलने के लिए तैयार रहना होगा।

"जो कोई अपने प्राणों को बचाना चाहेगा, वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे कारण अपने प्राणों को खोएगा, वह उसे पाएगा।" (मत्ती 16:25)

## क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जाने वाला था। (लूका 19:4)

बाइबल हमें बार-बार सिखाती है कि यीशु भीड़ में अधिक देर नहीं रहता; वह अपने मार्ग पर आगे बढ़ जाता है। इसलिए, यदि कोई उसके मार्ग पर हो, तो निश्चित रूप से वह उसे देख पाएगा। यदि जक्कई ने मेहनत तो की होती, परंतु गलत स्थान पर पेड़ पर चढ़ा होता, तो वह यीशु को नहीं देख पाता। इसी प्रकार, हमारी मेहनत और आत्मिक प्रयास तभी सफल होंगे जब हम सही मार्ग पर होंगे—उस मार्ग पर जिससे होकर यीशु गुजरता है। "मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।" (यूहन्ना 14:6)

यदि हम यीशु को देखना और पाना चाहते हैं, तो हमें उसी मार्ग पर खड़ा होना होगा जिससे वह गुजरता है—विश्वास, आज्ञाकारिता और परमेश्वर के वचन का मार्ग।

## जब यीशु उस जगह पहुँचा, (लूका 19:5)

इसका अर्थ है कि यीशु को वहाँ तक पहुँचने में कुछ समय लगा, क्योंकि वह भीड़ से घिरा हुआ था। ध्यान देने वाली बात यह है कि जक्कई ने यीशु का धैर्यपूर्वक इंतज़ार किया; वह यह सोचकर पेड़ से नीचे नहीं उतरा कि 'यीशु को आने में देर लगेगी।'

हमें भी यही सीखना चाहिए—यीशु के आने में कभी-कभी समय लग सकता है, लेकिन हमें धैर्य रखना होगा और अपने स्थान पर बने रहना होगा। यदि हम जल्दबाजी में अपना विश्वास खो दें या आत्मिक ऊँचाई से नीचे उतर जाएँ, तो हम यीशु के आगमन को चूक सकते हैं।

"चुपचाप यहोवा की बाट जोह, और धीरज से उसकी आशा रख।" (भजन संहिता 37:7)

## तो ऊपर दृष्टि करके उससे कहा, (लूका 19:5)

अब तक जक्कई को यह उम्मीद नहीं थी कि यीशु उसे देखेगा। वह तो केवल यह सोचकर पेड़ पर चढ़ा था कि किसी तरह यीशु को देख सके। लेकिन उसकी लगन और पवित्र श्रद्धा ने उसे सबसे बड़ा उपहार दिया—वह उपहार यह था कि यीशु ने खुद उसे देखा और उससे बात की।

यह हमें सिखाता है कि जब हम सच्चे मन से, बिना किसी स्वार्थ के, यीशु को खोजने के लिए प्रयास करते हैं, तो वह हमें अवश्य देखता है और हमारे प्रयासों का फल देता है। जक्कई की आत्मिक लगन और विश्वास ने उसे यीशु की उपस्थिति और आशीर्वाद दिलवाया।

"तुम मुझे खोजोगे और पाओगे, जब तुम पूरी रीति से मुझे ढूँढ़ोगे।" (यिर्मयाह 29:13)

## हे जक्कई, झट उतर आ; (लूका 19:5)

यहाँ यीशु ने जक्कई से कहा, "झट उतर आ!" न कि "ध्यान से उतर" या "आराम से उतर"। यह दिखाता है कि जक्कई की उत्सुकता को देखकर यीशु ने तुरंत उसे अपने पास बुलाया। जक्कई जितना बेसब्री से यीशु को देखना चाहता था, यीशु भी उतना ही बेसब्री से उसे मिलना चाहता था। जब तक जक्कई के दिल में यीशु को देखने की इच्छा नहीं जागी, तब तक यीशु ने कुछ नहीं कहा और इंतजार किया। लेकिन जैसे ही जक्कई के मन में इच्छा उठी, यीशु ने उसे तुरंत बुला लिया, क्योंकि यीशु का प्रेम हमें पाने के लिए अत्यधिक प्रबल है।

यह हमें सिखाता है कि यीशु हमें पाकर बहुत खुश होता है, और हम यदि थोड़ी सी कोशिश करके उसे खोजने की इच्छा रखते हैं, तो वह हमें बेहद प्यार और खुशी से प्राप्त करता है।

"मैं खड़ा हूँ और द्वार पर खड़ा हूँ; यदि कोई मेरी आवाज सुने और द्वार खोले, तो मैं उसके पास प्रवेश करूँगा।" (प्रकाशितवाक्य 3:20)

## क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। (लूका 19:5)

जब भी कोई व्यक्ति यीशु को देखने की सच्ची इच्छा रखता है, तो यीशु उसे दिखता है। लेकिन यीशु सिर्फ दिखकर संतुष्ट नहीं होता, वह हमारे जीवन में पूरी तरह से प्रवेश करना चाहता है और हमारे साथ, हमारे घर में रहना चाहता है। जब यीशु ने कहा, "जल्दी उतर आ, मुझे तेरे घर में रहना है," इसका अर्थ था कि जक्कई की मेहनत और उसकी सच्ची इच्छा अब सफल हुई है।

यह हमें यह भी सिखाता है कि जब हम पूरी श्रद्धा और समर्पण से यीशु को देखना चाहते हैं, तब वह न केवल हमें दिखता है, बल्कि पवित्र आत्मा के रूप में हमारे साथ रहने लगता है, हमारे जीवन में अपनी उपस्थिति को स्थिर करता है। यीशु का प्रेम हमसे मिलने के लिए उतना ही प्रबल होता है जितना हम उसकी खोज में लगे रहते हैं।

"जो कोई मुझसे प्रेम करता है, वह मेरी बातों को मानता है, और मेरे पिता भी उससे प्रेम करेंगे, और हम उसके पास आकर उसके साथ वास करेंगे।" (यूहन्ना 14:23)

वह तुरंत उतर कर आनंद से उसे अपने घर ले गया। (लूका 19:6)

जक्कई ने यीशु की बात मानी और तुरंत अपने मन और जीवन में उसे स्थान दिया। इससे यह सिखने को मिलता है कि जब यीशु हमें कुछ करने के लिए कहता है, तो हमें तुरंत उसकी आज्ञा माननी चाहिए। हमें न केवल बाहरी रूप से, बल्कि अपने अंदर, आध्यात्मिक रूप में उसे स्वीकार करना चाहिए।

जक्कई ने जैसे यीशु को आनंद से अपने घर में लिया, हमें भी पवित्र आत्मा के रूप में यीशु को अपने हृदय में स्थान देना चाहिए। जब हम पूरी श्रद्धा और आनंद से उसे अपने जीवन में आमंत्रित करते हैं, तो वह हमारे भीतर रहकर हमारे जीवन को बदलता है और हमें सच्चा शांति और आशीर्वाद देता है। इसलिए यह जानना जरूरी है कि यीशु खुद भी जक्कई के बिना जक्कई के घर जाने का सामर्थ्य रखता था, परंतु फिर भी वह जक्कई के साथ गया, और तब ही गया जब जक्कई ने यीशु के कहने अनुसार तुरंत उतरकर आनंद से यीशु को अपने घर ले लिया।

यह हमें यह सिखाता है कि यीशु स्वयं हमारे जीवन में प्रवेश करने के लिए पूरी तरह से सक्षम है, लेकिन वह हमारे आत्मिक स्वागत और सक्रियता का इंतजार करता है। जैसे ही हम पूरी श्रद्धा और आनंद के साथ उसके बुलाने पर जवाब देते हैं और उसे अपने हृदय और जीवन में स्थान देते हैं, तब यीशु हमें अपने भीतर पवित्र आत्मा के रूप में भर देता है।

हमें यह समझना है कि जब तक हम स्वयं से, पूरी ईमानदारी और इच्छा से यीशु को अपने अंदर प्रवेश करने की अनुमति नहीं देंगे, तब तक वह हमारे जीवन में स्थायी रूप से वास नहीं करेगा। यीशु और पवित्र आत्मा हमें तभी प्रभावी रूप से बदलने में सक्षम होते हैं जब हम उनके स्वागत के लिए खुले होते हैं।

"देखो, मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटाता हूँ। यदि कोई मेरी आवाज सुने और द्वार खोले, तो मैं उसके पास प्रवेश करूँगा और उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।" (प्रकाशितवाक्य 3:20)

यह देख कर सब लोगे कुड़कुड़ा कर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है। (लूका 19:7)

जब जक्कई ने यीशु की बात मानी और तुरंत उतरकर यीशु को अपने घर ले जाने लगा, तब लोगों को यह बात हज़म नहीं हुई। उन्होंने कहा, 'यीशु तो एक पापी इंसान के घर जा रहा है!'

ध्यान देने योग्य बात यह है कि जक्कई को तब "पापी" नहीं कहा गया जब वह लोगों से अनुचित पैसे वसूलता था, बल्कि जब उसने यीशु की बात मानी और सही रास्ते पर आने लगा, तब लोगों ने उसे पापी कह दिया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि दुनिया को यह स्वीकार करने में समस्या होती है जब कोई व्यक्ति परिवर्तन की ओर बढ़ता है। जब जक्कई गलत करता था, तब लोग चुप थे, लेकिन जब उसने सही रास्ता चुना, तब उसे ताने मिले। यह सिद्ध करता है कि इस संसार में शैतान ने लोगों के मन में ऐसी सोच भर दी है कि वे अपना नुकसान सह लेंगे, लेकिन प्रभु की महिमा को स्वीकार नहीं करेंगे।

सीखने योग्य बातें:

1. लोगों की राय पर मत चलो: अगर जक्कई ने लोगों की बातों को सुना होता, तो वह कभी भी यीशु के साथ न जाता और उसका उद्धार न होता।
2. सही मार्ग पर चलने से लोग आलोचना करेंगे: जब आप अपने जीवन में परमेश्वर को स्वीकार करेंगे, तो आपको भी आलोचना झेलनी पड़ सकती है।
3. यीशु पापियों को उद्धार देने आए हैं: यीशु उन लोगों के पास जाते हैं जो आत्मिक रूप से खोए हुए हैं, न कि केवल उनके पास जो पहले से धार्मिक दिखते हैं।

"मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराव के लिए बुलाने आया हूँ।" (लूका 5:32)

### जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा (लूका 19:8)

ध्यान दीजिए, जक्कई खड़े होकर बोला— यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। वह जिस पदवी (चुंगी लेने वालों का प्रधान) पर था, उसकी वजह से लोग हमेशा उसके सामने खड़े होते थे, और वह स्वयं आराम से बैठा रहता था। लेकिन जैसे ही उसे यीशु मिला, उसका हृदय बदल गया। अब वह खुद को बड़ा नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने एक छोटा सेवक समझने लगा। इसलिए, वह खड़े होकर प्रभु की इज्जत करता है और अपनी सच्ची विनम्रता को दिखाता है।

### हे प्रभु, देख! मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूँ। (लूका 19:8)

यहाँ "देख" शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। जक्कई ने सिर्फ यह नहीं कहा, "मैं अपनी आधी संपत्ति दान करूँगा," बल्कि उसने "देख" कहकर यह साबित किया कि वह उसी क्षण, बिना देर किए, अपने शब्दों को कर्म में बदल रहा था। यदि वह केवल कहता, "मैं आधी संपत्ति दे दूँगा," लेकिन वास्तव में कुछ नहीं करता, तो वह परमेश्वर के सामने यह कहने का साहस नहीं कर सकता था कि "देख"।

सीखने योग्य बातें:

1. शब्दों से अधिक कर्म जरूरी हैं: सिर्फ बोलने से कुछ नहीं होता, हमें अपने कार्यों से परमेश्वर के प्रति अपनी सच्चाई को प्रमाणित करना चाहिए।
2. परमेश्वर के सामने खड़े होने का अर्थ: जब यीशु हमारे जीवन में आता है, तो हमें भी जक्कई की तरह अपने अभिमान को छोड़कर परमेश्वर के सामने झुकना चाहिए।
3. सच्ची पश्चाताप का प्रमाण: जक्कई का यह कदम यह साबित करता है कि सच्ची पश्चाताप केवल कहने से नहीं होती, बल्कि जीवन में बदलाव लाने से होती है।

"हे बालकों, हम वचन और जीभ से नहीं, पर काम और सच्चाई के द्वारा प्रेम करें।" (1 यूहन्ना 3:18)

जक्कई ने आधी संपत्ति भी बाँट दी और यह घोषणा भी कर दी कि यदि मैंने किसी से अन्याय करके लिया है, तो उसे चार गुना लौटाऊँगा। जक्कई ने केवल आधी संपत्ति गरीबों में बाँटने का संकल्प नहीं लिया, बल्कि उसने यह भी कहा कि यदि उसने किसी से अन्याय करके कुछ लिया है, तो वह उसे चार गुना वापस करेगा।

लेकिन उसने केवल "जितना लिया, उतना लौटाने" की बात क्यों नहीं की?

1. यीशु जब जीवन में आते हैं, तो लालच समाप्त हो जाता है। जब कोई व्यक्ति सच में परमेश्वर से मिलता है, तो उसके लिए धन-दौलत, संपत्ति, पदवी—सबकुछ गौण हो जाता है। अब उसका उद्देश्य सिर्फ परमेश्वर को प्रसन्न करना और दूसरों को आशीषित करना बन जाता है।
2. मन फिराव (पश्चाताप) केवल गलती सुधारना नहीं, बल्कि उससे अधिक करना है। अगर जक्कई केवल उतना ही लौटाता जितना उसने लिया था, तो यह केवल एक सामान्य सुधार होता। लेकिन चार गुना लौटाना इस बात का प्रमाण था कि उसका हृदय पूरी तरह बदल चुका था और अब उसे लोभ नहीं था, बल्कि दूसरों को देने की इच्छा थी।
3. प्रेम केवल न्याय से बढ़कर होता है। न्याय कहता है, "जितना लिया, उतना लौटा दो।" लेकिन प्रेम कहता है, "मैं तुझ पर अनुग्रह करता हूँ, और तेरी क्षति की भरपाई अधिक करके देता हूँ।" यही बात यीशु ने हमें सिखाई—केवल न्यूनतम आवश्यक नहीं, बल्कि अधिक देने का हृदय।

सीखने योग्य बातें:

1. जब यीशु किसी के जीवन में आते हैं, तो वह स्वार्थी नहीं रहता, बल्कि देने वाला बन जाता है।
2. मन फिराव केवल गलती सुधारना नहीं, बल्कि उससे अधिक करना है, ताकि हमारे कार्यों से परमेश्वर की महिमा हो।
3. सच्चा प्रेम न्याय से भी बढ़कर होता है—हमें केवल लौटाना नहीं, बल्कि आशीषित भी करना चाहिए।

"जो तुझ से माँगे, उसे दे, और जो तेरा धन उधार लेना चाहे, उससे मुँह न मोड़।" (मत्ती 5:42)

तब यीशु ने कहा, 'आज इस घर में उद्धार आया है।' (लूका 19:9)

यीशु स्वयं ही उद्धारकर्ता हैं, और जब कोई व्यक्ति सच्चे मन से उसे ग्रहण करता है, तो वह स्वतः ही उद्धार पा लेता है। लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि यीशु ने "आज इस घर में उद्धार आया" यह तब कहा, जब जक्कई ने सच्चा पश्चाताप दिखाया और अपने कर्मों से इसे प्रमाणित किया।

यीशु ने यह बात घर में प्रवेश करते ही क्यों नहीं कही?

1. यदि केवल यीशु का आना ही उद्धार होता, तो वह घर में प्रवेश करते ही कह सकते थे, "आज तेरा उद्धार हुआ।"
2. लेकिन उन्होंने यह तब कहा, जब जक्कई ने अपने पापों का पश्चाताप किया, गरीबों को दान देने और अन्याय से ली गई संपत्ति को चार गुना लौटाने का संकल्प लिया।
3. इसका मतलब है कि उद्धार केवल यीशु के आने से नहीं, बल्कि तब होता है जब व्यक्ति अपने पापों को स्वीकार कर, पश्चाताप करके, सही मार्ग पर चलता है।

सीखने योग्य बातें:

1. यीशु हमारे जीवन में आते हैं, लेकिन हमें स्वयं अपने जीवन को बदलने के लिए प्रयास करना पड़ता है।
2. केवल यीशु को ग्रहण करना पर्याप्त नहीं, बल्कि हमें अपने पापों का सच्चा पश्चाताप भी करना होता है।
3. सच्चा पश्चाताप केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कर्मों से प्रमाणित होता है।
4. यीशु चाहते हैं कि हम अपने पुराने स्वार्थी जीवन को छोड़कर दूसरों के प्रति प्रेम और दया का जीवन जियें।

"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह जो सच्चा और धर्मी है, हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने के लिए विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (1 यूहन्ना 1:9)

## इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है। (लूका 19:9)

यीशु ने यह बात स्पष्ट करने के लिए कही कि जक्कई भी परमेश्वर के वादों का अधिकारी है, भले ही वह एक कर संग्रहकर्ता (टैक्स कलेक्टर) और पापी माना जाता था।

इसका क्या अर्थ है?

1. उद्धार सबके लिए है। जक्कई कोई बाहरी व्यक्ति नहीं था, बल्कि अब्राहम का एक पुत्र था—अर्थात् वह भी परमेश्वर की प्रजा का ही हिस्सा था, लेकिन वह अब तक भटक गया था। उसी तरह, आज भी कई लोग हैं जो परमेश्वर की संतान होने के बावजूद उद्धार से दूर हैं।
2. हर पापी के लिए आशा है। कुछ लोग सोचते हैं कि वे बहुत पापी हैं और उनके लिए कोई आशा नहीं है। लेकिन यीशु ने यह दिखाया कि हर कोई वापस आ सकता है, चाहे उसने कितना भी गलत किया हो।
3. यीशु हर खोए हुए को बचाने आए हैं। जक्कई की कहानी उन सभी के लिए एक संदेश है जो अब भी यीशु से दूर हैं। यीशु ने उन सभी के लिए अपना बलिदान दिया, जो अभी भी अंधकार में हैं, ताकि वे भी लौट सकें और उद्धार पा सकें।

सीखने योग्य बातें:

1. हमें उन लोगों को नहीं ठुकराना चाहिए जो अभी भी पाप में हैं, बल्कि उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि वे यीशु को जानें।
2. हर खोया हुआ व्यक्ति वापस आ सकता है, क्योंकि यीशु हर किसी को प्रेम करते हैं और उद्धार देना चाहते हैं।
3. यदि हम भी जक्कई की तरह जीवन जी रहे हैं, तो हमें तुरंत पश्चाताप करके यीशु को ग्रहण करना चाहिए।

## क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है। (लूका 19:10)

यीशु का यह कथन सुसमाचार (गॉस्पेल) का सार है। यह हमें बताता है कि उद्धार हमारा प्रयास नहीं, बल्कि परमेश्वर की कृपा और प्रेम का परिणाम है।

1. खोए हुआओं को ढूँढ़ने का अर्थ । जक्कई सोचता था कि वह यीशु को देखने आया है, लेकिन सच्चाई यह थी कि यीशु ही उसे ढूँढ़ रहे थे। यीशु केवल अच्छे लोगों के लिए नहीं आए थे, बल्कि उनके लिए भी जो गुमराह हो चुके हैं, जो पाप में हैं, जो संसार में भटक रहे हैं। इसी तरह, जब भी हमें प्रभु की उपस्थिति का अनुभव होता है, यह एक संयोग नहीं, बल्कि उसकी योजना होती है।

2. यह सिर्फ जक्कई के लिए नहीं था, यह हम सबके लिए है। हमारी जिंदगी में भी ऐसा होता है कि हम सोचते हैं कि हमने यीशु को खोज लिया। लेकिन असल में, यीशु हमें पहले से ही खोज रहे होते हैं, हमें अपने प्रेम से बुला रहे होते हैं। हम जहाँ भी हों, चाहे जितने भी पापी क्यों न हों, यीशु वहीं आकर हमें ढूँढ़ते हैं और उद्धार देते हैं।
3. यीशु पवित्र हैं, फिर भी वे पापियों के बीच आते हैं। यीशु ने स्वयं कहा कि "भले-चंगे को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है।" (मरकुस 2:17) वे उन लोगों को उद्धार देने आए जो पाप और अंधकार में थे, ताकि वे सत्य, प्रेम और अनंत जीवन पा सकें।

यह हमारे जीवन के लिए क्या संदेश देता है?

1. यदि आप खोए हुए महसूस करते हैं, तो जान लें कि यीशु आपको खोज रहे हैं।
2. यदि आप पाप में हैं, तो समझें कि यीशु आपको वहीं से उठा सकते हैं।
3. यदि आपको यीशु से मुलाकात होती है, तो यह संयोग नहीं, बल्कि उद्धार की योजना का हिस्सा है।

## धन्य हैं हमारे येशु और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture

Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha

Date: 30<sup>th</sup> January 2025

Contact: sks.officeuse@gmail.com

---

I sincerely thank my respected Pastor, Rev. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

**With gratitude,**

Sonu Kumar Saha